IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय कला निर्देशन के अंतर्गत कौशल एवं पेशेवर कारीगरी: आर्थिक और व्यावसायिक संभावनाएँ

Skills And Professional Craftsmanship Under Indian Art Direction: Economic And Commercial Possibilities

श्री रवि कुमार
(शोधार्थी)
स. सोभा सिंह फाइन आर्टस विभाग,
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला।

सारांश:

फ़िल्म की पटकथा के समय काल को सृजन करने के लिए जब कल्पना गहन शोध से गुज़र कर त्रि-आयामी रूप धारण करती है तो कला निर्देशन के रूप में सामने आती है। सरल शब्दों में इसके अंतर्गत सेट निर्माण की विधि को रखा जाता है, जिसके लिए तकनीकी अंग्रेजी शब्द 'बैकड्रॉप्स' का प्रयोग किया जाता है। बैकड्रॉप्स (पृष्ठभूमि) फ़िल्म का एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो अभिनेता के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान हुआ करता सेट निर्माण में भूमिका निभाता है। एक चित्रित पर्दे से लेकर एक शाही शहर के निर्माण की प्रक्रिया सेट के भीतर समाहित है, जिसमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे कि बढ़ई, वास्तुकार, चित्रकार, मूर्तिकार, ड्राफ्ट्समैन, ग्राफिक कलाकार और कई अन्य लोग योगदान डालते हैं।

1913 से शुरू हुए भारतीय फ़िल्मी सफ़र में 'चित्रित पर्दों से आलीशान सेट' और 'आलीशान सेट से ग्राफिक सेट' की वृत्ति में अनेकों ही ऐतिहासिक-पीरियड फ़िल्में, टैलिविज़न, सोशल मीडिया, विज्ञापन, प्रिंट और डिजिटल दुनिया में कला निर्देशन ने कला और संस्कृति को प्रफुलित करन के साथ-साथ पेशेवर कलाकारों के लिए रोज़गार के नये-नये आयाम विकसित किये हैं। स्वयं शोधार्थी के इस विधा में किये गये कार्य एवं तजुर्बे से यह अनुभव हुआ है कि भारत के अनेक भागों में पेशेवर कलाकारों की प्रचुरता के बावज़ूद कला निर्देशन प्रशिक्षण से अनभिज्ञ अनेक कलाकार रोज़गार न मिलने की स्थिति में मानसिक तनाव का सामना करते हुए, कला से विमुक्त हो कर विदेश जा रहे हैं। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए कला निर्देशन के स्तर को ऊँचा उठाने, बदलती तकनीको के ज्ञान को बढ़ाने, कलात्मक व्यवसाय के प्रशिक्षण के लिए यत्न करवाने और आधुनिक ज़रूरत को मुख्य रखते हुए पेशेवर कलाकारों को इस विधा के साथ जोड़ने के प्रयास सदका इस पेपर की योजना प्रयासपूर्वक बनाई गई है। आज भी ऐसे कई पारंपरिक व्यवसाय हैं, जिन के डिजिटल आधुनिकीकरण को मूल जड़ से अलग न करते हुए उचित दिशा और मार्गदर्शन देकर उचित उपयोग से नए आयाम और संभावनाएँ स्थापित की जा सकती है।

मुख्य शब्द: कला निर्देशन, सेट डिज़ाइन, भविष्य की संभावनाएँ, फ़िल्म, सिनेमा।

व्यावसायिक शिल्प कौशल या कुशल श्रम उन श्रमिकों और कलाकारों को संदर्भित करता है, जिन्होंने किसी विशेष क्षेत्र में अनुभव के माध्यम से विशेष विशेषज्ञता हासिल की हो। भारत में पेशेवर कलाकारों के साथ-साथ बढ़ई, लोहार, हस्तकार, चित्रकार, मूर्तिकार, दर्जी आदि ऐसे कई पारंपरिक व्यवसाय हैं, जो सदियों से मानव जीवन की जन्म से मृत्यु तक की गतिविधियाँ करते आ रहे हैं। जहाँ आधुनिक युग में डिजिटल क्षेत्रों के विकास ने प्रौद्योगिकी के माध्यम से कई पारंपरिक व्यवसायों को प्रभावित किया है, वहीं इसने कई पेशेवर कलाकारों के लिए नए रास्ते भी खोले हैं; जिसमें

कलाकार कलात्मक और मानसिक दृष्टि के संयोजन से भौतिक और डिजिटल क्षेत्र में तालमेल स्थापित करके कई पारंपरिक और कुशल कारीगरों और शिल्पकारों के लिए आर्थिक और व्यावसायिक संभावनाएं स्थापित कर सकते हैं।

भारत में बचपन से ही दादी-नानी की बातों को कहानियों के रूप में सुनने और सुनाने की परंपरा ने विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से कला और विज्ञान से सुशोभित 'सिनेमा' को उभारा, जहाँ से एक नयी विधा जन्म लेती है; जिस को 1914 ई. में 'विल्फ्रैड बकलैंड' ने 'कला निर्देशन' के नाम से सुशोभित करते हैं।[1] सिनेमा का नाम सुन कर सिर्फ़ एक ही ख्याल आता है, मनोरंजन और सिर्फ़ मनोरंजन; परन्तु मनोरंजन की इस प्रक्रिया के निर्माण के पीछे कितने ही कलाकारों की मेहनत का समुद्र साँस रोक कर बैठा होता है, जो तालियों के दो अल्फाज सुन कर ही थम जाने का साहस रखता है। किसी फ़िल्म की सफलता काफी हद तक सफल कला निर्देशन पर निर्भर करती है, क्योंकि अगर अभिनेताओं को चित्रित करने के लिए कोई उपयुक्त वातावरण नहीं होगा, तो चल चित्र केवल चलते-फिरते पात्रों से ज़्यादा कुछ नहीं लगेगे।'[2] फिल्म निर्माण में निर्देशन, कला निर्देशन, फोटोग्राफी निर्देशन एक त्रिकोण की तीन ऐसी भुजाएं हैं, जिनकी दृष्टि के साथ-साथ रचनात्मक एवं तकनीकी प्रयासों से पूरी फिल्म का फिल्मांकन किया जाता है।[3] कला निर्देशन के तहत, अधिकांश पीरियड फिल्मों के लिए करोड़ों रुपये की लागत से भव्य सेट बनाए जाते हैं; जो व्यक्ति को संपूर्ण वास्तुकला की रचनात्मक प्रवृत्ति से अवगत कराने के साथ कलाकारों के लिए आजीविका का साधन भी बनते हैं। एक मजदूर से लेकर कला निर्देशक तक, कई कारीगर सेट निर्माण में शामिल होते हैं, जिसमें कलाकारों की कलात्मक संवेदनाओं के साथ-साथ रचनात्मक ऊर्जा का संयोजन भी शामिल रहता है। एक कला निर्देशक की कल्पना का प्रवाह अन्य कलाकारों से भिन्न होता है, जिसमें वह पृष्ठभूमि को अपनी कल्पना की उड़ान से क्षणों में परिवर्तित करके वर्तमान से अतीत और अतीत से भविष्य की ओर ले जाता है।

स्वरूप के पक्ष से देखें तो कला निर्देशन का एक कार्य है; स्क्रिप्ट के समय-काल को दिखाती पृष्ठभूमि सृजन करना; जिस के लिए तकनीकी अंग्रेज़ी शब्द 'बैकड्रॉप्स' का प्रयोग किया जाता है। 'बैकड्रॉप्स' या 'बैकिंग' फ़िल्म का एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो अदाकार को अनुकूलित वातावरण प्रदान करने के साथ सेट निर्माण में योगदान डालता है। इसमें सेट या पृष्ठभूमि को निर्माण कर के या विभिन्न डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके फ़िल्म के अनुरूप बनाया जा सकता है। बैकड्रॉप्स और बैकिंग शब्द अक्सर थिएटर में एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किए जाते हैं, हालांकि फिल्म में सबसे आम शब्द बैकिंग है, जो बड़ी छवियों के रूप में प्राकृतिक वातावरण के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करता है।[4] देशकाल की मांग के अनुसार सेट के साथ प्रॉप्स जेसे फर्नीचर, पर्दे, पौधे, फोटो फ्रेम, कंप्यूटर, टेलीविजन, मोबाइल, वाहन और कई अन्य दृश्य तत्व फ़िल्म की टोन और वातावरण को प्रभावित करने में योगदान देते हैं। चित्रित पर्दे से लेकर सृजन किए हुए महल को सेट में शामिल किया जाता है। सेट के प्रयोग में आने वाले हिस्सों को प्रापर्टीज कहा जाता है; यह प्रापर्टी ही सेट को यथार्थवादी प्राकृतिक रूप प्रदान करती है। प्रापर्टी का उपयोग समय, परिवेश और अभिनेता के चरित्र के अनुसार किया जाता है, जो फिल्म की कहानी को दर्शकों तक पहुंचाने में मदद करती है। कला निर्देशन का कार्य 'कला विभाग' के अंतर्गत किया जाता है, जिसमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे कला निर्देशक, बढ़ई, सेट डिजाइनर, सेट डेकोरेटर, प्रॉपर्टी मास्टर, लोहार, हस्तकार, चित्रकार, मूर्तिकार, ग्राफिक विभाग और अन्य सहायक 'कला विभाग' के अंतर्गत कला निर्देशक की अध्यक्षता में शामिल रहते हैं। कला निर्देशक अपने साथी कलाकारों के साथ मिलकर प्रोडक्शन डिजाइनर द्वारा दिए गए माहौल और परिवेश को उजागर करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। प्रोडक्शन डिजाइनर फिल्म से जुड़े सभी तकनीकी विभागों के साथ समन्वय करके पूरी फिल्म की एक दृश्य रूपरेखा तैयार करता है, जिसके आधार पर कला निर्देशक पृष्ठभूमि में उसे साकार करता है।[5]

दादा साहब फाल्के द्वारा निर्मित पहली मूक फ़ीचर फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र (1913)' से लेकर अर्देशिर ईरानी द्वारा निर्देशित पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा (1931)' तक पहुँचते-पहुँचते 'चालीस के दशक में बड़े-बड़े धनवानो ने

---

1 **Rizzo, Michael**, 2015, *The Art Direction Handbook for Film& Television (Second Edition)*, Focal Press, Burlington, Page-5.

2 **सिद्धू, नवी**, (कला निर्देशक), साक्षात्कार, पटियाला, दिनांक-12-04-2021

3 **शैलेन्द्र** (निर्देशक, मुंबई), साक्षात्कार, अंबाला, दिनांक-08-09-2021

4 **M. Isackes, Richard & L. Maness Karen**, 2016, *The Art of the Hollywood Backdrop*, Regan Arts., New York, Page-2

5 **आशुतोष, आर. कविशकर**, (अध्यक्ष, कला निर्देशन और प्रोडकशन डिजाइन विभाग, एफ. टी आई, पुणे), साक्षात्कार, एफ. टी आई, पुणे, दिनांक-20-03-2024

फ़िल्मों में रूचि दिखानी शुरू की, जिसके परिणामस्वरूप फ़िल्मों का बजट बढ़ता गया और महंगे-महंगे भव्य सेट के साथ सजी फ़िल्मों का निर्माण होने लगा'।[6] सैरंध्री (1920)(1933), पुकार (1939), सिकंदर (1941), चित्रलेखा (1941) (1964), हुमायूँ (1945), झनक-झनक पायल बाजे (1955), अनारकली (1953), झांसी की रानी (1953), मुग़ल-ए-आज़म (1960), ताज-महल (1963) (1989), जहाँ-आरा (1964), नीलकमल (1968), मेरा नाम ज़ोकर (1970), पाकीज़ा (1972), अमर अक़बर एंथोनी (1977), शतरंज के खिलाडी (1977), 1942-ए लव स्टोरी (1994), हम दिल दे चुके सनम (1999) आदि फ़िल्मों ने भारतीय सिनेमा को भव्य सेट देखकर, कला निर्देशन के साथ सम्बन्धित कौशल एवं पेशेवर कलाकारों के लिए रोज़गार के नये-नये साधन विकसित किये। जिसमें जहाँ बाबूराव पेंटर, वी शांताराम, सोहराब मोदी, किदार शर्मा, के. आसिफ, राज कपूर, सत्यजीत रे, विधु विनोद चोपड़ा आदि निर्देशको ने भव्य सेट के माध्यम से इतिहास का पुनर्निर्माण किया, वहाँ एस.एस. वासन, बंसी चंद्रगुप्त, कानु देसाई, रूसी बैंकर, एम. के. सैयद, नितिन चंद्रकांत देसाई आदि कला निर्देशकों ने अपनी कुशल शिल्पकला का परिचय देकर कला निर्देशन को कलात्मक व्यवसाय की श्रेणी में शामिल किया। बीसवीं सदी के आखिर में निर्देशक 'संजय लीला भंसाली' और 'आशुतोष गोवारिकर' ने भारतीय हिंदी सिनेमा को वास्तविक 'भव्य सेट' की पोशाक पहना कर कला निर्देशन को उभारने की पुरज़ोर शुरुआत की; वहीं, टॉलीवुड, कॉलीवुड, मॉलीवुड, पॉलीवुड और बंगाली सिनेमा जैसे क्षेत्रीय सिनेमा में भी कला निर्देशन के मामले में उच्च स्तरीय फिल्मों ने रफ़्तार पकड़ी।

इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में भारतीय सिनेमा ने व्यावसायिक रूप धारण कर के 'कला और प्रौद्योगिकी' को एक साथ पर्दे पर प्रदर्शित किया। इस आधुनिकीकरण ने जहाँ कई पारंपरिक कलाकारों को प्रभावित किया; वहाँ नई पीढ़ी के युवाओं को भविष्य के सपनों की उम्मीद दिखाई। बेशक आधुनिक समय में वी.एफ.एक्स ने सेट की आवश्यकता को पहले की अपेक्षा घटा दिया, फिर भी बहु संख्या में लगान (2001), देवदास (2002), ब्लैक फ्राइडे (2004), ब्लैक (2005), रंग दे बसंती (2006), सावरियां (2007), ओम शांति ओम (2007), जोधा अक़बर (2008), देव डी (2009), रोबोट (2010), गुजारिश (2010), रा-वन (2011), अजिंठा (2012), लुटेरा (2013), राम लीला (2013), बॉम्बे वेलवेट (2015), बाहुबली (2015), प्रेम रतन धन पायो (2015), बाजीराव मस्तानी (2015), मोहनजोदड़ो (2016), पद्मावत (2018), तुम्मबाड़ (2018), कलंक (2019), पानीपत (2019), गंगूबाई काठियावाड़ी (2022), आर.आर.आर (2022), के.जी.एफ(2022) आदि फ़िल्मों में आलीशान सेट बनने की वृत्ति ने कई कारीगरों को सपनों की मंज़िल तक पहुँचाने के साथ पेशेवर तौर पर कला निर्देशन के क्षेत्र को ऊपर उठाया है। जिस इतिहास को सिर्फ किताबों में पढ़ा जाता था, उसे कला निर्देशन के माध्यम से वास्तविकता में परिवर्तित करके सृजन किया गया। आज कला निर्देशन के साथ-साथ कई कला निर्देशक प्रोडक्शन डिजाइन का काम भी करते हैं, भारतीय सिनेमा में ज्यादातर कला निर्देशन और प्रोडक्शन डिज़ाइन का काम एक ही व्यक्ति द्वारा किया जाता है, जिसमें नितिन चंद्रकांत देसाई, शर्मिष्ठा रॉय, साबू किरिल, समीर चंदा, वासिक खान, नितीश रॉय, संतोष नारायण शेट्टी, राज दुग्गर, श्रीराम लायेंगर, सुब्राता चक्रबोरती आदि कला निर्देशकों और प्रोडक्शन डिजाइनरों ने अपने अधीन विभिन्न निपुण एवं पेशेवर कलाकारों को प्रशिक्षित कर के भारतीय सिनेमा की कला और संस्कृति को संसार के सामने पेश किया है और कौशल एवं पेशेवर कलाकारों को सुनहरे भविष्य का सपना देखने के लिए इस कलात्मक व्यवसाय में आने के लिए प्रेरित किया है। इस क्षेत्र में शोधकर्ता के अपने अनुभव और विशेषज्ञों के साथ व्यक्तिगत मुलाक़ातों से यह महसूस हुआ कि कई प्रांतों में बढ़ई, लोहार, चित्रकार, मूर्तिकार, लोहार, हस्तकार, दर्जी आदि के पारंपरिक व्यवसाय के बावजूद कई कारीगर कला निर्देशन उद्योग के बारे में कम जानते हैं, साथ ही कला की शिक्षा प्राप्त करने वाले शिक्षित छात्र भी इस कलात्मक कार्य से अनभिज्ञ हैं। इसका मुख्य कारण पुरातन शिक्षा प्रणाली का है, जो छात्रों को केवल सरकारी नौकरियों में जाने के लिए ही प्रोत्साहित कर रही है। एफ. टी. आई, पुणे, मुंबई या हैदराबाद के अतिरिक्त भारत के किसी भी कला संस्थान में कला निर्देशन के तकनीकी प्रशिक्षण पर कोई ज़ोर नहीं दिया जा रहा, जिसके कारण दृश्य कला के छात्रों को बेरोज़गारी और मानसिक तनाव का सामना भी करना पड़ रहा है।

चित्रित पर्दों से शुरू हुई पृष्ठभूमि ने फ्लेक्स से आभासी वास्तविकता और आधुनिक युग में वी.एफ.एक्स[7](विजुअल इफ्फैकट) एवं सी.जी.आई (कम्प्यूटर ग्राफिक इमेजरी) तक का सफ़र तय किया है; जिस के

6 **सिन्हा, प्रसून,** *भारतीय सिनेमा.....एक अनंत यात्रा,* नटराज प्रकाशन, दिल्ली, 2006, पेज़-93

7 **Dinur, Eran,** 2017, *The Filmmaker's Guide to Visual Effect*, Routledge Taylor & Francis Group, New York London, Page-19

साथ कला निर्देशन की प्रक्रिया में बहुत बदलाव देखने को मिलता है। फिर भी हिंदी सिनेमा के वर्तमान और भविष्य में बड़े बजट की फ़िल्में बनने की संभावना हजारो कारीगरों के लिए रोज़गार के नए आयाम विकसित कर रही है। इसके लिए बस ज़रूरत है, कला निर्देशन के काम को सही क्रम में समझने की, जिसमें प्री-प्रोडक्शन, प्रोडक्शन और पोस्ट-प्रोडक्शन चरण कलाकारों की प्रतिभा को विश्व स्तर पर पेश कर उन्हें आर्थिक पक्ष से अमीर बनाता है।

स्क्रिप्ट का अध्ययन करके फ़िल्म की शूटिंग के लिए मुख्य तौर पर तीन तरह के स्थानों को प्रयोग में लाया जाता है; आंतरिक, बाहरी और स्टूडियो; स्टूडियो में आंतरिक और बाहरी कोई भी प्रभाव सृजन किया जा सकता है। पीरियड फ़िल्मों में बनने वाले भव्य सेटों के तकनीकी कार्य के लिए ड्राइंग से लेकर लघु मॉडल और लघु मॉडल से लेकर भौतिक सेट के निर्माण तक कई तकनीकी विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है, जिसमें बढ़ई, लोहार, हस्तशिल्प, चित्रकार, मूर्तिकार और अन्य तकनीकी विशेषज्ञ कला निर्देशन से संबंधित ज्ञान प्राप्त करके अपने समुदाय को आर्थिक रूप से मज़बूत कर सकते हैं। फिल्म के भौतिक सेट निर्माण से पहले लघु माडल बनाया जाता है और निर्माता, निर्देशक और फ़ोटोग्राफी निर्देशक की तरफ से लघु माडल को सहमति मिलने उपरांत भौतिक सेट निर्माण किया जाता है। इस के बाद कला निर्देशक और डिज़ाइनर के पास बहुत बड़ा स्थान होता है, जिस में तकनीकी ज्ञान, हुनर और तजुर्बो की परीक्षा होती है। कला शिक्षा के छात्र तकनीकी ज्ञान एफ. टी आई, पुणे से दो साल का 'प्रोडक्शन डिज़ाइन और कला निर्देशन' का डिप्लोमा कर, किसी अनुभवी कला निर्देशक के साथ सहायक के तौर पर प्रशिक्षण ले कर गांवों और शहरों में कला निर्देशन के अंतर्गत पेशेवर कारीगरों और पारंपरिक व्यवसायों के लिए योग्य मार्गदर्शक बन सकते है।

सेट निर्माण के अगले चरण के दौरान, सेट की सुरक्षा और मज़बूती के लिए सामग्री और तकनीकों का चयन करके, लकड़ी, लोहा या स्टील की पाईप का ढांचा खड़ा कर सेट के विभिन्न हिस्सों जैसे फ़र्श, दीवार, छत आदि को 'फैब्रिकेशन' तकनीक के तहत व्यवस्थित किया जाता है। जिस में भारत के कई पारंपरिक व्यवसाय बढ़ई, लोहार आदि अपने अधीन एक बड़े समूह के साथ समग्र सेट में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। फैब्रिकेशन में जहां सेट के हिस्सों को तैयार करके जोड़ा जाता है, वहीं 'प्लास्टरिंग' में लकड़ी से बने सेट के हिस्सों को यथार्थवादी बनावट का रूप दिया जाता है। पलास्टरिंग के बाद में सेट की 'फिनिशिंग' में रंग करके स्क्रिप्ट के समय को मुख्य रखते हुए चित्रकारी की जाती है, जो भारतीय कला का महत्वपूर्ण अंग है। इसके बाद, विभिन्न परतों के साथ सेट में गहराई या परिप्रेक्ष्य की भावना पैदा करने और दर्शकों का ध्यान कुछ तत्वों की ओर आकर्षित करने के लिए 'एडजिंग' का उपयोग सेट में एक लावण्या (सौंदर्य) के रूप में कार्य करता है, जिससे सेट दर्शकों को यथार्थवादी लगता है। इस को वास्तविक रूप तक पहुँचाने के लिए समय, वातावरण और अदाकार के स्वभाव के अनुसार प्रापर्टी को प्रयोग में लाया जाता है।

ड्राइंग की प्रक्रिया से लघु माडल और लघु माडल से फैब्रिकेशन, एडजिंग, फिनिशिंग और सेट में प्रापर्टी इत्यादि आने तक चित्रकार, मूर्तिकार, बढ़ई, लोहार, इमारतसाज़, ड्राफ़्टसमैन, सेट डिज़ाइनर आदि कई पेशेवर कारीगरों की आवश्यकता होती है। जिस में यहाँ के पढ़े लिखे नौजवान कलाकार 'कला निर्देशक' का तजुर्बा हासिल करके कई पेशेवर कलाकारों को मार्गदर्शन देकर भविष्य में नए आयाम विकसित कर सकते हैं। इससे न केवल भारतीय पारंपरिक व्यवसाय बल्कि भारतीय सिनेमा की कला निर्देशन भी मज़बूत होगी। इसके इलावा कला संस्थानों में तकनीकी शिक्षा के साथ वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए डिजिटल प्रशिक्षण पर भी जोर दिया जाना चाहिए, जिसमें छात्र और पेशा प्रमुख कारीगर करोमा-कि (वी. एफ. एक्स.) तकनीक को समझकर कला निर्देशन का कार्य पूरा कर सकते हैं। वी. एफ. एक्स के अंतर्गत 'प्रोडक्शन' प्रक्रिया में हरे या नीले रंग के पर्दो का प्रयोग कर के 'पोस्ट प्रोडक्शन' की संपादन प्रक्रिया के समय अपेक्षित प्रभाव सृजन किया जाता है, जिसमें तकनीकी और प्रौद्योगिकी-आधारित शिक्षा के छात्र और कलाकार योगदान दे सकते हैं।

प्रोडक्शन प्रक्रिया दौरान निर्देशक के नेतृत्व में फ़िल्म को शूट किया जाता है। शूटिंग के दौरान, सहयोगी और सहायक कला निर्देशक, सेट डिज़ाइनर, सेट ड्रेसर, बढ़ई विभाग, प्रापर्टी विभाग और सेट पर मौजूद लड़के कला निर्देशक की मदद के लिए उपस्थित रहते हैं और पोस्ट प्रोडक्शन प्रक्रिया का कार्य ख़त्म होने के बाद फ़िल्म अपना रूप ले लेती है। इस प्री प्रोडक्शन प्रक्रिया से लेकर पोस्ट प्रोडक्शन प्रक्रिया तक अलग-अलग विधाओं में माहिरों की ज़रूरत होती है, जिसमें कलाकार अपने क्षेत्र के साथ जुड़े फिल्म उद्योगो (बॉलीवुड, टॉलीवुड, कॉलीवुड, मॉलीवुड, पॉलीवुड और बंगाली सिनेमा जैसे क्षेत्रीय सिनेमा) के साथ संबंध स्थापित कर के फिल्मी कला निर्देशन की दुनिया में भविष्य बना सकता है। आज से कई साल पहले कला निर्देशन का दायरा केवल फ़िल्मों तक ही सीमित था, लेकिन आधुनिक समय में टेलिवीजन, सोशल मीडिया, विज्ञापन, प्रिंट और डिजिटल मीडिया आदि कला निर्देशन के बिना अधूरे हैं। कला निर्देशन भारत में उभरते प्रौद्योगिकी पेशेवरों की प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए हर दिन नए अवसर पैदा कर नवीन मंच प्रदान

करके आधुनिक युग में पुल का कार्य कर रहा है। आज के युग में जहां उन्नत तकनीक पेशेवर कारीगरों के लिए दिन-ब-दिन नए अवसर पैदा करने में मदद कर रही है, वहीं कला निर्देशन के माध्यम से प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने में भी भरपूर सहयोग दे रही है।

आधुनिक समय में प्रौद्योगिकी के प्रसार के कारण, भारत में कई जगह फ़िल्म स्टूडियो का निर्माण किया जा रहा है, जहां हिंदी और पंजाबी गीतो के शूट में कई छात्र एवं पेशेवर कारीगर कला निर्देशन के तहत सैट डिज़ाइन का कार्य करके जीवन निर्वाह कर सकते हैं। यू.आई (यूजर इंटरफेस) और यू.एक्स (यूजर एक्सपीरियंस) डिज़ाइन में कुशल कारीगरों की बढ़ती मांग की उम्मीद के साथ, सरकार और कला संस्थानों के सहयोग से कला शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ डिजिटल कौशल भी प्रदान किया जाना आवश्यक है। छात्रों को भी चाहिए बदलती तकनीक के साथ अपनी सोच में भी तबदीली लाऐ क्योंकि आधुनिक तकनीक के ज्ञान में विस्तार करने के साथ न केवल शिल्पकार बल्कि कला का क्षेत्र भी मज़बूत होगा। कुशल कला निर्देशक फ़िल्मों से लेकर विज्ञापन और गेमिंग तक विभिन्न उद्योगों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा कर विभिन्न क्षेत्रों के कई पेशेवर कारीगरों को साथ जोड़ कर कलात्मक और व्यवसाय पक्ष से सहायता कर सकते हैं। जिस में कौशल के साथ तकनीक हासिल करना आधुनिक छात्र कलाकारों के लिए चुनौती भी है और जरूरत भी, जिसमें कुछ संभावित दिशाएं एवं संभावनाएं इस प्रकार हैं-

इमरसिव अनुभव में आभासी वास्तविकता की जानकारी हासिल करके कला निर्देशक भौतिक और डिजिटल क्षेत्रों में संतुलन स्थापित कर भविष्य में नये दृष्टिकोण पैदा कर सकते हैं। आभासी वास्तविकता मूल रूप से कंप्यूटर ग्राफिक टूल के माध्यम से बनाया गया एक वातावरण है, जो भौतिक और यथार्थवाद दृश्य को डिजिटल रूप में व्यक्त करके वास्तविकता के बहुत करीब प्रतीत होता है। आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया में बढ़ती रुचि कला निर्देशकों के लिए डिजिटल दुनिया में दृश्य डिज़ाइन करने और बनाने के नए रास्ते खोलती है। जिस में कई कलाकार डिजिटल शिक्षा ले कर, सौंदर्य सिद्धांतों की मदद से उद्यमियों के पोर्टफोलियो, वेब साइट्स और एप्लिकेशन डिजाइन करके आय का एक अच्छा स्रोत उत्पन्न कर सकते हैं।

बेशक, कला, विज्ञान, मनोविज्ञान और प्रौद्योगिकी अलग-अलग विषय हैं, लेकिन उनके बीच सहयोग और समन्वय करके, कलाकार कई पेशेवर क्षेत्रों में पारंपरिक सीमाओं से हट कर नवीनताकारी प्रोजेक्टों का नेतृत्व कर वैश्विक स्तर पर कलात्मक स्थापनाएं स्थापित करने के लिए नवीन परियोजनाओं का नेतृत्व कर सकते हैं। इसके साथ ही डिजाइन प्रक्रियाओं में ए.आई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के उपयोग को जानकर कला निर्देशन प्रक्रिया में नई रचनात्मक संभावनाएं व्यक्त की जा सकती हैं।

मनोरंजन उद्योगो में रचनात्मक सामग्री की बढ़ती मांग के साथ, कलाकारों के लिए फिल्म, विज्ञापन और डिजिटल मीडिया परियोजनाओं में पृष्ठभूमि निर्माण करने के कई अवसर हैं। इस लिए कलात्मक कला निर्देशन जैसे उद्योगो के रूझानों के साथ जुड़े रहना इस क्षेत्र में तकनीकी कैरियर की संभावनाओं को बड़ा सकता है। कला निर्देशन का काम ज्यादातर रचनात्मक क्षेत्र में किया जाता है, जिसमें ग्राफिक डिजाइन, ब्रांडिंग, विज्ञापन, प्रकाशन, टेलिवीजन, फिल्म, वेब विकास और गेमिंग आदि उद्योग भारत के सृजनात्मक कलाकारों को इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए आमंत्रित करते है। आधुनिक समय में विज्ञापन एवं मार्केटिंग उद्योग भी भारत में अपना पैर जमा रहा है, जिसमें दृश्य सौंदर्यशास्त्र के तत्वों का उपयोग कर के कला निर्देशक विज्ञापन, ब्रांडिंग और प्रचार अभियानों के लिए आकर्षक दृश्य बनाने के साथ-साथ अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और देश की समृद्ध विरासत को प्रतिबिंबित करने के लिए पारंपरिक तत्वों को आधुनिक सौंदर्यशास्त्र के साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके साथ ही, कई पेशेवर कलाकार विभिन्न स्थानों, नृत्य एवं रंगमंच मंचों आदि पर आयोजित कार्यक्रमों, समारोहों, त्योहारों के लिए नई रचनात्मक रेखाएँ खींच सकते हैं।

भारत में अपने-अपने प्रांतों के कलाकारों का निर्माताओं, निर्देशकों और अन्य रचनात्मक व्यक्तियों के साथ सहयोग और पेशेवर नेटवर्क भविष्य में कई नई परियोजनाओं के लिए मार्ग खोल सकता है, जिसके लिए सभी कौशल एवं पेशेवर कलाकारों को भिन्न-भिन्न प्रकार के डिजिटल मंचों पर एक साथ आ कर भविष्य के लिए प्रयास करना होगा। इसमें नेटवर्किंग इवेंट, फिल्म फेस्टिवल और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म कलाकारों के काम को प्रदर्शित करके अन्य सहयोगियों के साथ जुड़ने के नए आयाम प्रदान कर सकते हैं।

स्वतंत्र कलाकारी (फ्रीलांसिंग) की प्रक्रिया आधुनिक समय में कलाकारों को एक ही समय में विभिन्न उद्योगों में काम करने की अनुमति देती है, इसमें कला निर्देशक को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का आनंद मिलता है और वह सिनेमा और कई अन्य डिजिटल माध्यमों में काम करके पेशेवर एवं व्यवसाय रूप से मजबूत बन सकते है। इस के साथ तकनीकी

उन्नति और कला निर्देशन के तहत आधुनिक समय में उपयोग में आने वाले उपकरणों और सॉफ्टवेयरों को अपनाने से कुशलता में विस्तार हो सकता है।

उपरोक्त चर्चा के आधार पर कह सकते हैं कि भारत में कला निर्देशन का भविष्य उन कौशल एवं पेशेवर कलाकारों के लिए उज्ज्वल दिखाई देता है, जो मनोरंजन उद्योग, सोशल एवं डिजिटल मीडिया अथवा विभिन्न कलात्मक एवं रचनात्मक क्षेत्रों में दृश्य सौंदर्यशास्त्र को व्यक्त करने में विशेषज्ञ है। वह कलाकार एवं कला निर्देशक जो उभरते उद्योग को ध्यान में रखते हुए और प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव को स्वीकार करते हुए दिन-ब-दिन अपने कौशल को निखारते रहते हैं, नई प्रौद्योगिकिओं के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाकर कुशल उद्योग बना सकते हैं। कौशल विकास में निवेश करना और भारतीय एवं विदेशी उद्योगों के साथ अप्पडेट रहना, जहाँ कलाकारों के लिए ज़रूरी है, वहाँ अलग-अलग राज्यों के कला स्कूल और प्रशिक्षण संस्थान विभिन्न पेशेवर कलाकारों को प्रौद्यौगिकी के आधार पर शिक्षा प्रदान करके कलाकार और उद्योग के बीच मार्ग दर्शक का कार्य कर सकते है। अत: आधुनिक युग में कला निर्देशन के साथ-साथ आधुनिकीकरण को समझना कलाकार के लिए एक चुनौती भी है और आवश्यकता भी। आधुनिकीकरण जहाँ कलाकार के लिए कई चुनौतियाँ पैदा करता है, वहीं असीमित संभावनाओं के कई नए क्षेत्रों को भी विकसित करता है। इस प्रकार आज के डिजिटल और मशीनीकरण के युग को नकारा नहीं जा सकता, लेकिन संबंधित क्षेत्र की विरासत और संस्कृति के कुछ हिस्सों को जोड़कर इसे मूल जड़ों से जोड़ कर रखा जा सकता है, क्योंकि मूल जड़ ही पेशे को हुनर और हुनर को कलात्मकता पैदा करने का दर्जा रखती है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. सिन्हा, प्रसून, 2006, *भारतीय सिनेमा.....एक अनन्त यात्रा,* श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली
2. भास्कर, कुमार (डा.), 2015, *राष्ट्रीयता और हिन्दी सिनेमा,* संजय् प्रकाशन, नई दिल्ली
3. M. Isackes, Richard & L. Maness Karen, 2016, *The Art of the Hollywood Backdrop*, Regan Arts., New York.
4. Dinur, Eran, 2017, *The Filmmaker's Guide to Visual Effect*, Routledge Taylor & Francis Group, New York London.
5. Ausaja, SMM, 2009, *Bollywood in Posters*, Om Book International, New Delhi.
6. Vittal, M.R., 1994, *The Art of Film Direction*, Good Companions, Baroda.
7. Culhane, John, 1981, *Special Effects in The Movies, How They Do It*, Ballantine Books, New York.
8. fichner-rathus, lois, 1989, *Understanding art*, new jersey: prentice hall.
9. Thoraval, Yves, 2000, *The Cinemas of India*, Macmillan India Limited.
10. Ganti Tejaswini, 2004, *Bollywood A Guidebook to Popular Hindi Cinema*, Routledge, New York.
11. Rizzo Michael, 2015, *The Art Direction Handbook for Film&Television (Second Edition)*, Focal Press, Burlington.
12. Fabri, Charles Louis (Dr.), 1963, An Introduction to Indian architecture, asia publication house.